"राही मासूम रजा के उपन्यासों का भाषावैज्ञानिक शैलीविज्ञान का विश्लेषण"

डॉ. सोनकांबले अरुण अशोक
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
किसन वीर महाविद्यालय, वाई
मो.नं–9503007853

शोध सारांश

भाषाविज्ञान भाषा का विश्लेषण करता है। भाषा एवं भाषिकी का अध्ययन करते समय इनके सिद्धांतों का अनुप्रयोग होता है। सैद्धांतिक भाषाविज्ञान का व्यवहार में प्रयोग जब किया जाता है तब उसे अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान नाम से जाना जाता है। अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान की शाखाओं में शैलीविज्ञान का स्थान विशिष्ट है। शैलीविज्ञान के मुख्यतः तीन प्रकार हैं– एक भाषावैज्ञानिक शैलीविज्ञान, दूसरा पाठपरक शैलीविज्ञान, तीसरा संरचनात्मक शैलीविज्ञान। शैलीविज्ञान के विश्लेषण में भाषावैज्ञानिक शैलीविज्ञान महत्वपूर्ण है। भाषावैज्ञानिक शैलीविज्ञान में ध्वनिगत चयन अनुप्रयोग की दृष्टि से लेखक की वृत्ति का व्यावहारिक विश्लेषण है। मानव मुख से उच्चरित आवाज को ध्वनि या स्वन कहते हैं। भाषा का अध्ययन ध्वनि के माध्यम से ही किया जाता है। प्रस्तुत आलेख राही मासूम रजा कृत –आधा गाँव, टोपी शुक्ला और हिम्मत जौनपुरी उपन्यासों में स्वरावृत्ति के अनुप्रयोग पर आधृत है।

कूटशब्द – भाषाविज्ञान, अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, शैलीविज्ञान, राही मासूम रजा, आधा गाँव, टोपी शुक्ला, हिम्मत जौनपुरी, आवृत्ति और स्वरावृत्ति आदि।

स्वरावृत्ति :

एक वाक्य या पद में एक स्वर की अनेक बार आवृत्ति हो उसे स्वरावृत्ति कहा जाता है राही के उपन्यासों में इसकी आवृत्ति अनेक बार हुई है। जिससे अभिव्यक्ति में एक प्रकार से सघनता आई है। हिंदी के अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ आदि स्वरों का राही मासूम रजा कृत आधा गाँव, टोपी शुक्ला

और हिम्मत जौनपुरी उपन्यासों में प्रयोग होकर एक प्रकार से संगीतात्मकता के वर्णन से पाठ में रोचकता दिखाई देती है।

*** आधा गाँव:**

* "रब्बन– बी जवाब देने ही वाली थी कि कुबरा देने ही वाली थी कि कुबरा आ गयी और आते ही बोली, "हमरा माथा त उहे दिन उनका रहा बा 'जी', जेह दिन हम ओको अग्गू भैया के दालान में देखा कि अकेली बैठी है। ('अ' की आवृत्ति पृ.सं. 121)
* "उन्हें इतना तो होश रहा कि उन्होंने गाडी को गाँव की तरफ मोडा।" ('ओ' की आवृत्ति, पृ.सं. 150)
* "हम्माद मियाँ का जी तो चाहा कि बुढ़िया जुलाहिन का गला घोंटदें, जिसने उसकी माँ बनकर उन्हें गंगौली में आँख उठाकर जीने का हक नहीं दिया। ('उ' की आवृत्ति, पृ.सं. 182)
* "छह बरस में गंगौली काफी बदल गयी थी।" ('ई' की आवृत्ति पृ. सं.218)
* "गाँव में और किसी से तो उसका मिलना–जुलना था नहीं । इसलिए वह अपनी माँ ही के सामने बिठलाकर पाकिस्तान के खिलाफ़ तकरीरे कसने लगा। ('इ' की आवृत्ति, पृ.सं.238)
* "जनाना इमाम बाड़े में मिट्टी के तेल का लैंप एक ताक में बैठा सैदानियों के इंतजार में ऊँघ रहा था।" ('ऐ' की आवृत्ति पृ. सृ.296)
* "हकीम साहब को शिकायत यह थी कि सारे नौजवन जो जबरदस्ती लाम पर भेजे जा रहे है, तो खेत कौन करेगा और जिन काश्तकारों से पुरानी शहर पर लगान वसूल करने के लिए बार–बार बकाया लगान का दावा करना पडता हो, उनसे ड्योढा और दूना लगान हासिल करना नामुमकिन है ('औ' की आवृत्ति, पृ.सं. 143)

*** टोपी शुक्ला :**

* "टोपी शुक्ला बहुत ही यार टाइप के लोग थे। अपने उसूलों के भी बड़े पक्के थे और उनका सबसे बड़ा उसूल यह था कि दोस्ती में उसूल नहीं देखे जाते।' ('उ' की आवृत्ति, पृ.सं.09)
* "यह सुनकर उसको ढांढस बँधा कि अगर लखनऊ का लखनऊ भी दादी की पार्टी का हो तो कोई फिक्र नहीं क्योंकि लखनऊ दूर है।" ('ऊ' की आवृत्ति पृ.सं. 20)
* "यह सुनते ही सारा मजमा उसकी तरफ लपका। वह भागा। दूसरी तरफ से एक सरदारजी आ रहे थे।" ('आ' की आवृत्ति पृ.सं. 37)
* "बैठिए, बैठिए। "टोपी ने कहा, मैं आपके जगह पर बैठ जाता हूँ।' ('ऐ' की आवृत्ति पृ.सं.75)

* "अवश्य भेजा था। यदि सिस्टर आलेमा को यह कहने का अधिकार है कि मैं भाई मेरा मतलब है जैदी साहब की बीवी से लव करता हूँ तो मुझे यह कहने का अधिकार है कि मैं उनसे लव करता हूँ।" ('अ' की आवृत्ति, पृ.सं.67)

* "टोपी जिस डिब्बे में बैठा उसमें बड़ी भीड़ थी। शायद भीड ही हिन्दुस्तानी रेलों की सबसे बड़ी पहचान है। टोपी ने यूनिवर्सिटी वाली काली शेरवानी पहन रखी थी।" ('ई' की आवृत्ति पृ.सं.72)

* "इसलिए उनकी बात करनी पड़ी। शबनम सिस्टर आलेमा के बिना समझ में न आती।" ('ए' की आवृत्ति पृ.सं.97)

* "साहित्य के इतिहास को उसने दिल–हि–दिल में दुहरा डाला।" ('इ' की आवृत्ति 4 बार पृ.सं.94)

* "इंशा अल्लाह और माशा अल्लाह और सुबहान अल्लाह के नीचे बात नहीं करते थे।" ('औ' की आवृत्ति, पृ.सं. 14)

*** हिम्मत जौनपुरी :**

* "वह उसी समय मरे हों या न मरे हों परन्तु इसमें कोई शक नहीं कि वह भी उसी दिन मरे जिस दिन बेगम मरी" ('ओ' की आवृत्ति, पृ.सं. 19)

* "यह थी सात साढे सात बरस की वह सुक्कन जो बड़ी होने पर अपनी खाला बेगम की तरह सकीना बीबी कही गई।" ('ई' की आवृत्ति, पृ.सं. 26)

* "कई दरबारों से नवबहार का बुलावा आ चुका था।" ('आ' की आवृत्ति, पृ.सं. 48)

* "ठीक है।" सुक्कन ने फैसला कर लिया। "जो अल्लाह कोई मंजूर हैं, ई हे हो जाये।" ('ऐ' की आवृत्ति, पृ.सं. 75)

* "मुझे क्यों समझा रहे हो।" उसने बात काटी। "जमुना मेरा मतलब है कि जुबैदा को समझना। ('उ' की आवृत्ति, पृ.सं. 104)

* "उस दिन 'आरजू' को यह तमाम बातें मालूम नहीं थी।" ('ऊ' की आवृत्ति, पृ.सं.27)

उपर्युक्त विवेचन से ज्ञात होता है कि भाषाविज्ञान की महत्वपूर्ण इकाई ध्वनि के विश्लेषण में अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान की शाखा शैलीविज्ञान में ध्वनिगत चयन में स्वरावृत्ति का राही के उपन्यासों में इसका अनुप्रयोग हुआ है। स्वरावृत्ति से मानव मन–मस्तिष्क में स्थित भाव स्थायी रूप से स्थित होने के कारण अपने आप से वह भाव जागृत होता है । राही मासूम रजा के उपन्यासों का भाषावैज्ञानिक शैलीवैज्ञानिक विश्लेषण से स्वर का शब्द बनने में केवल सहायक ही नहीं, बल्कि अनिवार्य स्थान है । जिस

प्रकार से समुंदर बनने के लिए बूँद की जरुरत है उसी तरह से शब्द बनने के लिए स्वरों की आवश्यकता है । भाषावैज्ञानिक शैलीविज्ञान का प्रमुख उपकरण चयन है । ध्वनिस्तर पर चयन में स्वरावृत्ति का अनुप्रयोग होने से कलात्मकता का अविष्कार दृष्टिगोचर हुआ है । जिससे लेखक की अभिव्यक्ति की पहचान के साथ संगीतात्मकता का प्रयोग नज़र आता है।

संदर्भ :

1. आधा गाँव, प्रथम संस्करण : नौवीं आवृत्ति :2013, राजकमल प्रकाशन, प्रायवेट लिमिटेड, 1 बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली– 110002 ।

2. टोपी शुक्ला , तेरहवाँ संस्करण, 2016, राजकमल प्रकाशन, प्रायवेट लिमिटेड, 1 बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली– 110002 ।

3. हिम्मत जौनपुरी, राही मासूम रजा, प्रथम संस्करण : मार्च 1969, शब्दकार प्रकाशन, 2203 गली डकौत, तुर्कमान गेट, दिल्ली ।